

10 साल

सेवा सुशासन
और गरीब कल्याण



एक भारत

श्रेष्ठ भारत

एडवोकेट प्रवीण बलवदा
पूर्व उपाध्यक्ष,
राजस्थान बार काउंसिल



प्रधानमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदी जी

ने जनता की सेवा को सर्वोपरि रखते हुए 10 साल में अनेक जनहित के कार्य किये हैं, जिससे एक सशक्त समाज का निर्माण हुआ है।



व्यक्तिगत परिचय



नाम : श्री प्रवीण बलवदा

पिता का नाम : श्री होशियार सिंह

माता का नाम : श्रीमती भगवती देवी

जन्म तिथि : 5 अप्रैल 1967

जन्म स्थान : झारोड़ा, तहसील बुहाना, जिला - झुंझुनू

जाति : जाट

शैक्षणिक योग्यता : बीएससी, एल एल बी

व्यवसाय : वकील राजस्थान हाई कोर्ट

भाषा : हिंदी, अंग्रेजी

संपर्क सूत्र : +91-98291 41669

स्थानीय निवास : जयपुर

ईमेल : balwadapraveen@gmail.com

अभिरुचि : समाज सेवा, कानूनी सहायता करना, राजनीति, हिन्दी साहित्य



जीवन परिचय :-

- राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक इतिहास में गहराई से निहित झुंझुनू जिले की बुहाना तहसील के छोटे से गाँव झारोड़ा में श्री प्रवीण बलवदा का जन्म हुआ। उनके प्रारंभिक वर्षों को उनके परिवार द्वारा स्थापित मूल्यों द्वारा आकार दिया गया था। इनके पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था। "बोहरा जी" उपनाम से जाने जाने वाले इनके पूर्वजों ने भारत की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। श्री प्रवीण बलवदा के दादा श्री ताराचंद जो की एक स्वतंत्रता सेनानी थे, उनको 14 साल की उम्र में जेल में डाल दिया गया था। देशभक्ति का जोश इनकी रगों में दौड़ता है और उन्होंने गहराई से अपने दादा जी से राष्ट्र प्रेम की भावना को आत्मसात किया है। अपनी वीरता और बहादुरी के लिए जानी जाने वाली भूमि झुंझुनू, जिसे सैनिकों और बहादुरों की भूमि के रूप में जाना जाता है, उनके दिल में एक विशेष स्थान रखता है, जो न्याय, सेवा और समाज के प्रति प्रतिबद्धता पर उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।
- झुंझुनू के ऐतिहासिक शहर में श्री प्रवीण बलवदा जी की जड़ें समृद्ध सांस्कृतिक और देशभक्तिपूर्ण विरासत के साथ जटिल रूप से बुनी गई हैं। उनके दादा, श्री रामनारायण जी बलवदा, और पिता श्री होशियार सिंह बलवदा, अपने समाज की कहानी को आकार देने में अग्रणी रहे हैं। इनकी माँ श्रीमती भगवती देवी शिक्षित महिला होने और परिवार के आर्य समाज के सिद्धांतों का पालन करने के कारण, प्रवीण बलवदा ने कम उम्र से ही समाज सेवा और सामुदायिक कल्याण की भावना को आत्मसात कर लिया।
- प्रवीण बलवदा ऐसे माहौल में पले-बढ़े जहाँ शिक्षा और ज्ञानोदय को प्राथमिकता दी जाती थी, श्री प्रवीण बलवदा एक ऐसे परिवार से हैं जहाँ ज्ञान सिर्फ एक खोज नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका था। उनके पिता श्री होशियार सिंह, शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे, उन्होंने एक सरकारी स्कूल शिक्षक के रूप में युवा दिमागों को आकार देने के लिए अपना करियर समर्पित किया। समय के साथ, उनके पिता की प्रतिबद्धता और विशेषज्ञता ने उन्हें महेंद्रगढ़ जिले में उपमंडल शिक्षा अधिकारी की प्रतिष्ठित भूमिका तक पहुंचाया। उनके परिवार के सदस्यों की यह शैक्षणिक पृष्ठभूमि जीवन और सामाजिक योगदान के प्रति प्रवीण के दृष्टिकोण में एक आदर्श बदलाव के लिए उत्प्रेरक बन गई। परिवार का सतनाली गांव में स्थानांतरण एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जहाँ पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक शिक्षा के संगम ने प्रवीण के समग्र विकास की नींव रखी। न्याय और अनुशासन पर जोर देने वाली उनके पिता की शिक्षाएं वह आधार बनीं, जिस पर प्रवीण ने सेवा और कानूनी वकालत का अपना रास्ता बनाया। इस शैक्षिक वंशावली ने न केवल उनके चरित्र को आकार दिया, बल्कि समाज में सार्थक योगदान देने की उनकी आकांक्षा को भी बढ़ावा दिया।
- श्री प्रवीण बलवदा जी का ननिहाल झुंझुनू के सांगासी गांव में है, जो ऐतिहासिक महत्व रखता है। उनके परनाना, श्री चिमना राम जी ने 1921 में सांगासी से किसान आंदोलन की शुरुआत की थी। यह आंदोलन प्रगतिशील निर्णयों के लिए एक प्रकाशस्तंभ बन गया, जिसने राजस्थान भर के किसानों को प्रेरित किया, बेटे और बेटियों के लिए समान शिक्षा, अंधविश्वासों का परित्याग जैसे सिद्धांतों की वकालत की। मुर्दाघर प्रथाओं पर प्रतिबंध, और अन्य सामाजिक सुधार भी इस आंदोलन की देन थी। इसी परिवार ने पंडित मदन मोहन मालवीय को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए धन का सहयोग भी किया था।
- देशभक्ति और सुधार के इस माहौल में श्री प्रवीण बलवदा जी ने न्याय और राष्ट्र सेवा के सिद्धांतों को आत्मसात किया। देशभक्ति और बलिदान की कहानियों में निहित उनकी माँ की शिक्षाओं ने देश और किसान समुदाय, दोनों की सेवा करने के उनके दृढ़ संकल्प को प्रेरित किया।

पारिवारिक परिचय :-

- श्री प्रवीण बलवदा विविध उपलब्धियों से समृद्ध परिवार से हैं। उनके भाई-बहनों में उनके दो बड़े भाई और एक बड़ी बहन हैं। उनके बड़े भाई, श्री महिपाल बलवदा ने अपना करियर भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को समर्पित कर दिया और अब सेवानिवृत्त जीवन का आनंद ले रहे हैं। दूसरे बड़े भाई, श्री सुशील बलवदा, कानूनी पेशे में आने से पहले भारतीय सेना में एक अधिकारी के रूप में कार्यरत थे, वर्तमान में दिल्ली में भारत के सर्वोच्च न्यायालय में कानून का अभ्यास कर रहे हैं। उनकी बड़ी बहन, भारत की वर्तमान दूसरी महिला डॉ. सुदेश धनखड़ हैं, जो मौजूदा उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की पत्नी हैं। डा सुदेश धनखड़ झुंझुनू और ग्रामीण इलाकों में विभिन्न सामाजिक पहलों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। श्री प्रवीण बलवदा अपनी बहन और अपने बहनोई श्री जगदीप धनखड़ जी से समाज में उनके प्रभावशाली योगदान से प्रेरणा लेते हैं। इस पारिवारिक पृष्ठभूमि ने निस्संदेह श्री प्रवीण बलवदा के मूल्यों और सार्वजनिक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- श्री प्रवीण बलवदा जी के वैवाहिक रिश्ते ने कानूनी दिग्गजों के साथ उनके संबंधों को और भी मजबूत कर दिया। नानग का बास, आजादी कलां, झुंझुनू में उनकी शादी ने उन्हें उनके ससुर, श्री महादेव सिंह जी, जो अपने समय के एक प्रमुख वकील थे, से जोड़ा। उनके ताया ससुर श्री कनैयालाल महला ने 1977 में जनता पार्टी से सांसद रहकर परिवार में राजनीतिक प्रतिष्ठा जोड़ी।
- कानूनी उत्कृष्टता के मामले में, प्रवीण बलवदा की यात्रा न केवल उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ बल्कि उनके परिवार के अटूट समर्थन के साथ भी बुनी गई है। श्रीमती मनीषा बलवदा से उनका विवाह 12 मई 1990 को हुआ। मनीषा बलवदा के साथ विवाहित होने से उनका संबंध विधिक समझदारी और पारिवारिक बल का एक अद्वितीय संगम प्रकट होता है।
- श्रीमती मनीषा की पृष्ठभूमि उनकी वैवाहिक यात्रा में एक विशिष्ट परत जोड़ती है। कानूनी जड़ों वाले परिवार से आने के कारण वह स्वाभाविक रूप से श्री प्रवीण बलवदा के पेशे की बारीकियों को समझती हैं। उनकी समझ और समर्थन उन्हें श्री प्रवीण बलवदा के जीवन में ताकत का एक अमूल्य स्तंभ बनाता है। इन्होंने साथ मिलकर, चुनौतियों का सामना किया है और पिछले चौतीस वर्षों में और मजबूत होकर उभरे हैं।
- श्री प्रवीण बलवदा के पुत्र श्री मोहित बलवदा के समावेश से परिवार का विस्तार हुआ। कानूनी पेशे की विरासत को आगे बढ़ाते हुए, श्री मोहित बलवदा भी वकालत के पेशे में आ गए हैं। झुंझुनू के टॉक चिलरी के प्रसिद्ध ठेकेदार हरफुल चौधरी की बेटी श्रीमती भावना चौधरी से उनका विवाह परिवार को कानूनी और प्रभावशाली संबंधों से जोड़ता है। दंपति उच्च न्यायालय में वकालत करते हैं और राजस्थान के कानूनी परिदृश्य में योगदान देते हैं।
- श्री मोहित बलवदा की वकालत यात्रा: श्री मोहित बलवदा, अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए, श्री प्रवीण बलवदा द्वारा स्थापित मूल्यों और नैतिकता का प्रतीक हैं। वर्तमान में राजस्थान उच्च न्यायालय में केंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए, श्री मोहित बलवदा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, विशेष रूप से शेखावाटी के लोगों को न्यूनतम शुल्क पर कानूनी सहायता उपलब्ध करवाते हैं। झुंझुनू में बेदखली से संबंधित मामलों में उनकी कानूनी दक्षता विशेष रूप से प्रभावशाली रही है। इन्होंने झुंझुनू के गावों के लोगों की तरफ से हाई कोर्ट में पैरवी की और प्रशासन के अत्याचार से उन्हें मुक्ति दिलवाई है।
- हाशिये पर पड़े लोगों की वकालत: श्री मोहित बलवदा की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक झुंझुनू में अपने लंबे समय से चले आ रहे आवासों से बेदखली का सामना कर रहे लोगों का प्रतिनिधित्व करना शामिल है। वह उन प्रशासनिक निर्णयों के खिलाफ उनके हितों की वकालत करते हैं जो उन्हें विस्थापित करना चाहते हैं। कई भूमि विवाद मामलों में उनकी जीत झुंझुनू के लोगों को उनके सही स्थान बनाए रखने में मदद करने के प्रति उनके समर्पण को रेखांकित करती है। श्रीमती भावना बलवदा भी हाई कोर्ट में मोहित बलवदा का बखूबी साथ देती हैं। हाई कोर्ट में यह जोड़ी तर्कसंगत और मजबूत केस लड़ने और जीतने के लिए जानी जाती है।
- बलवदा परिवार की न्याय के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्तिगत उपलब्धियों से परे है, जो न्याय और सहानुभूति के मूल्यों में गहराई से निहित कानूनी सेवा की विरासत का निर्माण करती है। श्री मोहित बलवदा जिस सैद्धांतिक रास्ते पर चल रहे हैं, उसमें श्री प्रवीण बलवदा का प्रभाव स्पष्ट है, और जरूरतमंद लोगों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए लगन से काम कर रहे हैं।

शैक्षणिक परिचय :-

- श्री प्रवीण बलवदा की शैक्षिक यात्रा एक सरकारी स्कूल में उनके प्रारंभिक वर्षों से शुरू होती है, जहाँ उन्होंने 10वीं कक्षा तक अपनी पढ़ाई की। अपने स्कूल के दिनों के दौरान, 12 साल की छोटी उम्र में, वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े और प्रथम वर्ष पूरा किया, जो आरएसएस द्वारा समर्थित मूल्यों और अनुशासन के प्रति उनकी प्रारंभिक प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सिद्धांतों को अपनाते हुए, श्री प्रवीण बलवदा की वैचारिक ज्ञान के क्षेत्र में यात्रा शुरू हुई। आरएसएस के सदस्यों का प्रभाव, उनका अटूट अनुशासन और मजबूत मूल्यों की प्रतिमूर्ति युवा प्रवीण पर गहराई से प्रभाव डालती थी। खुद को पूरे दिल से समर्पित करते हुए, उन्होंने आरएसएस की शाखा में सक्रिय रूप से भाग लिया और खुद को इसकी शिक्षाओं में डुबो दिया। यह प्रतिबद्धता और समर्पण तब फलीभूत हुआ जब उन्होंने वर्ष 1982 में आरएसएस का प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण प्रमाणपत्र पूरा किया। आरएसएस के प्रभाव ने उनमें राष्ट्र और समाज के प्रति कर्तव्य की गहरी भावना पैदा की, विनम्रता, समर्पण और ध्यान केंद्रित करने के गुणों को बढ़ावा दिया।
- आरएसएस के साथ उनके जुड़ाव का परिवर्तनकारी प्रभाव व्यक्तिगत विकास तक ही सीमित नहीं था; यह एक सकारात्मक शक्ति थी जो उनके जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त थी। उनके परिवार ने उनके व्यवहार में एक महत्वपूर्ण सुधार देखा, जो उनके बोलचाल में नए अनुशासन और विनम्रता से चिह्नित था। आत्म-अनुशासन, देशभक्ति और सामुदायिक सेवा जैसे मूल्यों पर जोर देने वाली आरएसएस की शिक्षाओं ने प्रवीण के चरित्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन शिक्षाओं के माध्यम से उन्होंने समाज की सेवा, न्याय और समुदाय के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता के सार को आत्मसात किया।
- 10वीं कक्षा पूरी करने के बाद, प्रवीण अपनी बहन श्रीमती सुदेश धनकड़ के साथ रहने के लिए जयपुर चले गए। उन्होंने उच्च माध्यमिक शिक्षा महावीर जैन स्कूल जयपुर से पूर्ण करी। 12वीं के बाद श्री प्रवीण बलवदा ने अग्रवाल कॉलेज जयपुर से बीएससी की डिग्री ली। अपनी स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय में एलएलबी पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त किया, जहां वे सक्रिय रूप से छात्र राजनीति में शामिल हुए, छात्र चिंताओं और कल्याण की वकालत की। अपने विश्वविद्यालय के दिनों के दौरान, प्रवीण राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) का हिस्सा बन गए और प्रतिष्ठित सी प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, वे राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सदस्य भी रहे।
- प्रवीण का जुनून शिक्षा से परे कुश्ती (कुश्ती) और वॉलीबॉल जैसे खेलों में सक्रिय भागीदारी के साथ बढ़ा। इन प्रारंभिक वर्षों ने न केवल उनकी शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों को आकार दिया, बल्कि सामाजिक कल्याण और सामुदायिक विकास के प्रति उनकी बहुमुखी प्रतिबद्धता की नींव भी रखी।

अधिवक्ता राजस्थान हाई कोर्ट:-

- एलएलबी की डिग्री प्राप्त करने के बाद, प्रवीण ने अपने बहनोई श्री जगदीप धनखड़ के साथ मिलकर जयपुर में अपना कानूनी करियर शुरू किया। साथ में, उन्होंने न्याय की हिमायत करने और क्षेत्र में कानून के शासन को कायम रखने के उद्देश्य से एक मजबूत साझेदारी बनाई। हालाँकि, प्रवीण की यात्रा व्यक्तिगत जीत पर नहीं रुकी; यह पेशेवर मील के पत्थर के शिखर के रूप में सामने आया। अतिरिक्त स्थायी वकील (केंद्र सरकार) के रूप में सेवा करने से लेकर बार काउंसिल के सदस्य के रूप में एक प्रतिष्ठित पद अर्जित करने और अंततः बार काउंसिल के उपाध्यक्ष की प्रतिष्ठित भूमिका तक पहुंचने तक, प्रवीण ने कानूनी परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ी। अतिरिक्त केंद्र सरकार परिषद के रूप में उनका कार्यकाल असाधारण प्रदर्शन से चिह्नित था, जिससे कानूनी बिरादरी में एक निडर और मुखर वकील के रूप में उनकी प्रतिष्ठा मजबूत हुई।
- प्रवीण बलवदा का दृष्टिकोण व्यक्तिगत उपलब्धियों से आगे निकल गया। प्रवीण ने जयपुर की परिधि में सत्र अदालतों की स्थापना की जोरदार वकालत की, जो कानूनी शिक्षा और सुलभ न्याय के प्रति उनकी दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।
- 1990 में, प्रवीण बलवदा additional standing council के पद पर आसीन हुए, एक ऐसी भूमिका जिसने उन्हें सम्मानित न्यायाधीश, आरएम लोढ़ा के मार्गदर्शन में लाया। यह जुड़ाव प्रवीण के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण अनुभव साबित हुआ, क्योंकि आरएम लोढ़ा बाद में भारत के मुख्य न्यायाधीश बने।
- 1993 में, जगदीप धनखड़, जो उस समय विधायक थे, को प्रवीण बलवदा के रूप में एक विश्वसनीय कानूनी वकील मिला। इस अवधि के दौरान, श्री धनखड़ ने खुले तौर पर भाजपा सरकार का समर्थन किया, उनकी नीतियों के साथ खुद को जोड़ा। हालाँकि, इस समर्थन के कारण दल-बदल विरोधी आरोप लगे, एक कानूनी मामला जिसके लिए कुशल कानूनी प्रतिनिधित्व की आवश्यकता थी उस समय प्रवीण बलवाड़ा, अपने कानूनी कौशल के साथ, दलबदल विरोधी मामले की जटिलताओं को सुलझाते हुए, श्री धनखड़ के साथ खड़े रहे।
- इसी तरह 2015 में तेजी से आगे बढ़ते हुए, एक और कानूनी मील का पत्थर प्रवीण बलवदा और जगदीप धनखड़ के बीच के सहयोग को प्रदर्शित करता है। इस बार, ध्यान जाट समुदाय के ओबीसी वर्गीकरण पर था, यह मामला राजस्थान उच्च न्यायालय के गलियारों में गूंजा। श्री धनखड़ के कानूनी वकील सहायक के रूप में, प्रवीण बलवदा ने दलीलें पेश करने और मामले की पेचीदगियों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, साथ ही सामुदायिक वर्गीकरण के आसपास कानूनी चर्चा में अपना योगदान भी दिया।
- श्री प्रवीण बलवदा और उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ की गतिशील कानूनी जोड़ी ने न केवल कानूनी चुनौतियों का सामना किया, बल्कि कानूनी और राजनीतिक परिदृश्य के चौराहे पर भी खड़े रहे। उनका सहयोग उस महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है जो कानूनी वकालत राजनीतिक आख्यानो को आकार देने और कानूनी आरोपों के खिलाफ व्यक्तियों का बचाव करने में निभाती है।
- 1993 में, प्रवीण बलवदा ने बार काउंसिल के सदस्य के पद के लिए चुनाव लड़कर कानूनी प्रशासन के क्षेत्र में कदम रखा, इस पद को उन्होंने सफलतापूर्वक हासिल किया, जिससे कानूनी प्रशासन में एक विशिष्ट यात्रा की शुरुआत हुई। इस मुद्दे के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें 1998 में फिर से चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे कानूनी बिरादरी के भीतर उनकी स्थिति मजबूत हुई। बार काउंसिल के सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, प्रवीण बलवदा कानूनी प्रशासन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर असाधारण सुझाव और दृष्टिकोण प्रदान करके परिवर्तनों के अग्रदूत बने। एक उल्लेखनीय उदाहरण राजस्थान उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश के समक्ष उनका प्रतिनिधित्व था, जिसमें उन्होंने जयपुर के आसपास सत्र न्यायालय पीठों की स्थापना की वकालत की थी। नागरिकों, विशेषकर दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों के सामने आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए, प्रवीण ने न्यायिक सेवाओं के विकेंद्रीकरण के महत्व को रेखांकित किया। उनका दृष्टिकोण उन लोगों के दरवाजे तक न्याय पहुंचाना था, जिनके लिए दिन के शुरुआती घंटों के दौरान प्रमुख शहरों की यात्रा करना कठिन होता था, जिससे अक्सर उन्हें काफी वित्तीय नुकसान उठाना पड़ता था।

उपाध्यक्ष बार काउंसिल :-

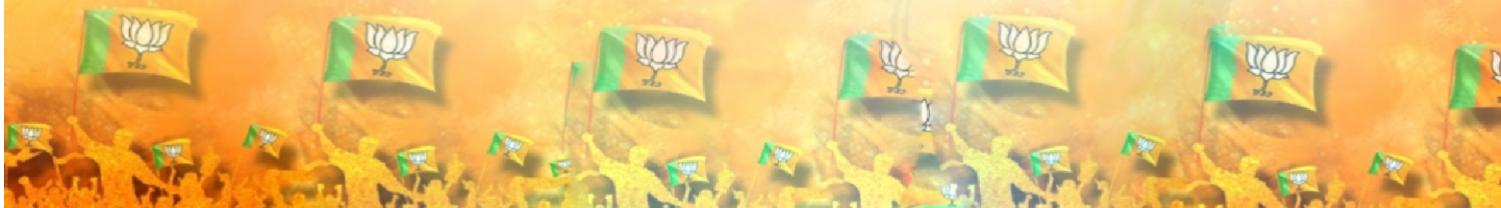
- अपने कानूनी करियर के एक निर्णायक क्षण में, प्रवीण बलवदा 2003 में बार काउंसिल के उपाध्यक्ष के पद पर आसीन हुए, एक मील का पत्थर जिसने उनकी पहले से ही शानदार यात्रा में विशिष्टता की एक परत जोड़ दी। इस पद का महत्व कानूनी विशेषज्ञ, नियामक निकायों और व्यापक कानूनी ढांचे के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में इसकी भूमिका में निहित है। उपाध्यक्ष के रूप में, प्रवीण बलवदा ने प्रभावशाली पद संभाला और कानूनी परिदृश्य को आकार देने वाली नीतियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के निर्माण में योगदान दिया। इस कार्यालय की जिम्मेदारियों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता उनके त्रुटिहीन उपस्थिति रिकॉर्ड, हर समय 100% उपस्थिति बनाए रखने से स्पष्ट थी।
- कानूनी प्रशासन के जटिल क्षेत्र में, बार काउंसिल के उपाध्यक्ष के रूप में प्रवीण बलवदा का कार्यकाल कानूनी उत्कृष्टता के उच्चतम मानकों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक था। उनकी बहुआयामी भूमिका पारंपरिक जिम्मेदारियों से परे थी, उन्होंने प्रमुख समितियों में सक्रिय रूप से योगदान दिया और कानूनी बिरादरी पर एक अमिट छाप छोड़ी।
- प्रमुख समितियों में सदस्यता:
प्रवीण बलवदा के कार्यकाल की एक पहचान कानूनी पेशे के नियामक ढांचे से जुड़ी महत्वपूर्ण समितियों में उनकी सक्रिय भागीदारी थी। नामांकन समिति के सदस्य के रूप में, उन्होंने नए अधिवक्ताओं को बार में प्रवेश देने की सावधानीपूर्वक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यह सुनिश्चित किया कि केवल योग्य व्यक्ति ही सम्मानित कानूनी समुदाय में प्रवेश करें।
- अनुशासनात्मक समिति:
इसके अतिरिक्त, प्रवीण बलवदा ने अनुशासनात्मक समिति को अपनी विशेषज्ञता प्रदान की, जिसे कानूनी पेशे के भीतर नैतिक मानकों को बनाए रखने का काम सौंपा गया था। इस समिति में उनकी भूमिका कानूनी पेशे की अखंडता को बनाए रखने और उच्चतम नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण थी।
- बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिबद्ध उपस्थिति:
समिति की बैठकों के दौरान, प्रवीण बलवदा अपनी सक्रिय भागीदारी और बहुमूल्य योगदान के लिए सामने आए। उनके सहयोगियों ने इन समितियों के सुचारू कामकाज के प्रति उनकी दृढ़ता और प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। अपनी भूमिका की मांग भरी प्रकृति के बावजूद, प्रवीण बलवदा ने हर बैठक में उपस्थित रहकर, सम्मान और प्रशंसा अर्जित करके एक अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया।
- अपनी बौद्धिक कुशाग्रता और वैचारिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध, प्रवीण बलवदा ने खुद को कानूनी परिदृश्य में एक विचारक और रणनीतिकार के रूप में स्थापित किया है। उनके मामलों को न केवल प्रमुख कानून पत्रिकाओं में जगह मिली है, बल्कि इच्छुक वकीलों के लिए केस स्टडी के रूप में भी काम किया है, जो उनके तर्कों की गहराई और विश्लेषणात्मक कठोरता को दर्शाता है। कानूनी हलकों में, प्रवीण बलवदा को बुद्धि को व्यावहारिकता के साथ मिश्रित करने की उनकी क्षमता के लिए माना जाता है, जिससे वह साथियों, कनिष्ठों और न्यायाधीशों के बीच एक सम्मानित व्यक्ति बने हुए हैं। उनकी लोकप्रियता उनके गहन शोध और विश्लेषणात्मक रूप से मजबूत कानूनी प्रतिनिधित्व को दिए गए सम्मान से रेखांकित होती है, जो एक प्रतिष्ठित कानूनी विशेषज्ञ के रूप में उनकी स्थिति की पुष्टि करता है।

प्रमुख संगठनों के लिए कानूनी प्रतिनिधित्व :-

- श्री प्रवीण बलवदा का कानूनी कौशल कानूनी शासन में उनकी भूमिकाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है। उन्होंने अदालत में विभिन्न प्रमुख संगठनों का प्रतिनिधित्व किया है, जिनमें एलआईसी, देश के अग्रणी उद्योगपति श्री रतन टाटा, बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान, शाहरुख खान और कई राज्य सरकारें शामिल हैं। अपने भाषण कौशल के लिए जाने जाने वाले, श्री प्रवीण बलवदा ने केंद्र और राज्य सरकारों के लिए कई मामले जीते हैं और सार्वजनिक कल्याण के लिए कई जनहित याचिकाएँ दायर की हैं।
- श्री प्रवीण बलवदा कानून के गहरे जानकार भी हैं और अपने शोध और डेटा संग्रह के कारण कोर्ट में अपने विरोधियों को भी निरुत्तर कर देते हैं। उनकी तथ्य-जांच और प्रतिनिधित्व किसी भी मामले के लिए एक मजबूत आधार बनाते हैं और उन्हें अपनी कानूनी बिरादरी में सम्मान दिलाते हैं। कानूनी अनुसंधान के लिए Google पर प्रलेखित उनके मामले, उनकी बुद्धिमत्ता के लिए व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं।
- साथी वकीलों की ओर से प्रशंसा:
प्रवीण बलवदा के सहकर्मी कानूनी उत्कृष्टता के प्रति उनके समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए उनका बहुत सम्मान करते हैं। उनकी सक्रिय भागीदारी ने न केवल कानूनी कौशल बल्कि कानूनी पेशे के सामने आने वाली सूक्ष्म चुनौतियों की गहरी समझ को भी प्रदर्शित किया। उनके साथ काम करने वाले वकील इन समितियों की परिष्कृत कार्यप्रणाली में योगदान देने वाले उनके अमूल्य सुझावों के बारे में बात करते हैं।
- प्रतिबद्धता की विरासत:
बार काउंसिल के उपाध्यक्ष के रूप में प्रवीण बलवदा की विरासत न केवल उनके प्रशासनिक कौशल का प्रमाण है, बल्कि कानूनी पेशे को रेखांकित करने वाले सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता की कहानी भी है। समितियों में उनकी भागीदारी उच्चतम नैतिक मानकों के प्रति समर्पण का उदाहरण है, जो कानूनी समुदाय की अखंडता और न्याय के प्रति सेवा सुनिश्चित करती है।
- बार काउंसिल के उपाध्यक्ष के रूप में प्रवीण बलवदा का कार्यकाल इस बात का एक चमकदार उदाहरण है कि प्रतिबद्धता, सक्रिय भागीदारी और मूल्यवान योगदान कानूनी पेशे को कैसे ऊपर उठा सकते हैं। उनकी विरासत कानूनी पेशेवरों की एक नई पीढ़ी को व्यक्तिगत गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने और कानूनी समुदाय की सामूहिक बेहतरी में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित करती है।
- प्रवीण की परोपकारिता वंचितों को कानूनी सहायता प्रदान करने की उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता के माध्यम से चमकती है, यह अक्सर अपनी सेवाओं को निःशुल्क या नाममात्र शुल्क पर प्रदान करते हैं। उनकी अटूट नैतिक दिशा और नैतिक सिद्धांत प्रत्येक नागरिक के लिए मौलिक अधिकार के रूप में न्याय में उनके दृढ़ विश्वास को प्रतिबिंबित करते हैं।
- अपनी विरासत से गहराई से जुड़े व्यक्ति के रूप में, श्री प्रवीण बलवदा जी की यात्रा में न केवल कानूनी प्रशंसाएं शामिल हैं, बल्कि सामाजिक कल्याण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता भी शामिल है। उनका योगदान अदालत कक्ष से परे तक फैला हुआ है, जो न्याय, समानता और राष्ट्र की सेवा के सिद्धांतों के प्रति समर्पित जीवन को दर्शाता है।
- झुंझुनू में व्यापक रूप से स्वीकृत और सम्मानित, प्रवीण बलवदा लोकसभा चुनावों के लिए एक अनुकरणीय उम्मीदवार के रूप में उभरे हैं, जो मूल्यों में गहराई से निहित और लोगों की सेवा के लिए समर्पित सच्चे नेतृत्व के सार को दर्शाते हैं। लचीलेपन, प्रतिबद्धता और न्याय की निरंतर खोज से चिह्नित उनकी यात्रा, व्यापक भलाई के लिए एक व्यक्ति के समर्पण की परिवर्तनकारी शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ी है।

अध्यात्म एवं समाज के प्रति समर्पण :-

- प्रवीण बलवदा के जीवन की चुनौतियों के बीच में उनकी स्वास्थ्य चेतना और किसानों के अधिकारों की वकालत के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के साथ ही धार्मिक उत्साह का धागा सहजता से बुना जाता है। श्री प्रवीण बलवदा केवल एक कानूनी विद्वान से कहीं अधिक हैं; वे बहुमुखी गुणवत्ता वाले व्यक्ति हैं, जिन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अमिट छाप छोड़ी है।
- अदालत कक्ष से परे, श्री प्रवीण बलवदा आध्यात्मिक यात्रा पर जाते रहते हैं जो उन्हें भारत भर के प्रतिष्ठित तीर्थ स्थलों पर ले जाती है। उत्तर में पवित्र अमरनाथ यात्रा से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम का आशीर्वाद लेने तक, आध्यात्मिक यात्रा में उत्तराखंड, स्वर्ण मंदिर अमृतसर, कांगड़ा माता हिमाचल और अन्य प्रमुख पवित्र स्थानों की यात्रा शामिल है। श्री प्रवीण बलवदा सालासर बालाजी और खाटू श्याम के भी अनन्य भक्त हैं। उनके धार्मिक स्वभाव और आध्यात्मिकता के प्रति श्रद्धा की वजह से उनके मित्रों ने उन्हें "बाबा" उपनाम दिया है, जो परमात्मा के साथ उनके गहरे संबंध को दर्शाता है।
- श्री प्रवीण बलवदा न केवल तीर्थयात्राओं में भाग लेते हैं बल्कि सक्रिय रूप से विभिन्न पूजाओं और धार्मिक समारोहों का आयोजन भी कराते रहते हैं। धार्मिक प्रथाओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता व्यक्तिगत मान्यताओं से परे फैली हुई है, जो उनके आसपास के लोगों के बीच आध्यात्मिक जागरूकता के माहौल को बढ़ावा देती है।
- स्वास्थ्य चेतना के प्रतीक के रूप में, श्री प्रवीण बलवदा उन लोगों के लिए प्रेरणा के एकमात्र स्रोत के रूप में खड़े हैं जो अक्सर अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज करते हैं। स्वास्थ्य के प्रति समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हुए, वह लंबी सैर, संतुलित आहार और समग्र फिटनेस की वकालत करते हैं। स्वस्थ जीवन शैली के प्रति उनका सक्रिय रुख कई लोगों को प्रभावित करता है और उनसे अपनी सेहत को प्राथमिकता देने का आग्रह करता है।
- व्यक्तिगत सेहत की वकालत के अलावा, श्री प्रवीण बलवदा ने पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कई वृक्षारोपण कार्यक्रमों का आयोजन किया है व उनका हिस्सा बने हैं। उनकी पहल व्यक्तिगत स्वास्थ्य और पर्यावरण की भलाई के बीच अंतर्संबंध की गहरी समझ को दर्शाती है। वह सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या से पूरी तरह असहमत हैं पर्यावरण -अनुकूल विकल्प के रूप में सार्वजनिक परिवहन की उनकी वकालत टिकाऊ जीवन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- कानूनी गलियारों से परे, श्री प्रवीण बलवदा किसानों के अधिकारों के एक कट्टर समर्थक के रूप में उभरे हैं। वह किसानों को आवश्यक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर बल देते हुए, कृषक समुदाय की ओर से पूरे जोश से बोलते हैं। किसानों की आय दोगुनी करने और उनकी दुर्दशा को कम करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की पहल के समर्थन में उनके विचार अनुकरणीय हैं।
- भाजपा सरकार की नीतियों का समर्थन करते हुए, श्री प्रवीण बलवदा ने किसानों की आय बढ़ाने के ठोस प्रयासों पर प्रकाश डाला है। किसानों के कल्याण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण की समग्र तस्वीर पेश करती है।
- प्रवीण बलवदा का जीवन कानूनी जीत से कहीं आगे तक फैली हुआ है, जिसमें आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य वकालत और किसानों के अधिकारों के प्रति उत्कट प्रतिबद्धता शामिल है। उनके बहुमुखी गुणवत्ता वाले व्यक्तित्व ने एक समृद्ध तस्वीर बुनी है जो न केवल उनकी व्यक्तिगत यात्रा को दर्शाता है बल्कि उन समुदायों और मुद्दों पर उनके गहरे प्रभाव को भी दर्शाता है जिनका वह उत्साहपूर्वक समर्थन करते हैं। "वकील साहब" के रूप में, वह आध्यात्मिक चेतना, शारीरिक कल्याण और सामाजिक-पर्यावरणीय जिम्मेदारी को मिश्रित करने वाले सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के लिए प्रेरणा, मार्गदर्शन और वकालत करना जारी रखते हैं।



10 सेवा सुशासन साल और गरीब कल्याण



गरीबों की सेवा, वंचितों का सम्मान

- गरीबों का मान बढ़ाया, 3 करोड़ परिवारों को पक्का आवास दिलवाया
- 11.72 करोड़ शौचालय का निर्माण, बड़ी सुरक्षा और स्वाभिमान
- 12 करोड़ घरों में पहुंचा नल से स्वच्छ जल



नारी शक्ति, देश की तरक्की

- महिलाओं को मिली धुएं से मुक्ति, 9.6 करोड़ से अधिक उज्ज्वला कनेक्शन
- महिलाओं को सम्मान मिला, सशस्त्र बलों में स्थान मिला
- 27 करोड़ से अधिक महिलाओं को मिली मुद्रा की शक्ति, पेड मैटरनिटी लीव हुई 12 से बढ़कर 26 सप्ताह

युवा शक्ति की आकांक्षाओं की पूर्ति

- आज भारत में हर दिन दो कॉलेज और हर हफ्ते एक यूनिवर्सिटी स्थापित
- पिछले 9 सालों में देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या 387 से बढ़कर 693 हुई
- पिछले 9 सालों में देश में हुए नए आईआईएम और नए स्थापित
- पीएम कौशल विकास योजना से 1.37 करोड़ से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण
- भारत बना विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम देश में आय 37 हजार से अधिक स्टार्टअप, 100 से अधिक यूनिคอร์न



सुनिश्चित हो रहा किसान का कल्याण

- पीएम किसान सम्मान निधि योजना से 11 करोड़ से अधिक किसानों को साल के 6 हजार
- नौ साल में कृषि बजट में करीब 6 गुना वृद्धि
- पीएम फसल बीमा योजना से हुआ किसान साथियों को 1.33 लाख करोड़ का भुगतान नीम कोटेड यूरिया, सॉडल हेल्थ कार्ड, सिंचाई योजना, ई-नाम जैसे कई कदम बना रहे किसानों का जीवन आसान